

1.830 I

अश्वत्थामाज्येष्टविरंजिविभ्रपापूप ॥ ३ ॥ १ ॥ ८ ॥
धेनुमुद्रादर्शय ॥ विंदु ॥ ॥ इति सगरा पूजा ॥

ॐ नमः श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ अथ गणेश पूजा विधि ॥ ॥
प्राणाया न त्यास ॥ जल सोधन ॥ तिर्थ सोधन ॥ नैविद्य
सोधन ॥ स्नान पाचके पंचासृत इत्यादि न चिथ स्नान घेले
॥ सूर्या अर्घ्या य ॥ गुरु नमस्कार त्या सार्घ पात्र पूजा ॥
आत्मा तंधुन के ॥ मोहनि फय ॥ सलील सरोय ॥ हरे कें
छा ३ सिता व्याय ॥ मूर्ति ॥ मंत्र ॥ हुं मोहनि पाः पू ॥ ३ ॥ पंच वलि

विया ॥ मयुरा सनाय पाः पू ॥ श्री कल पुत्र वदुक नाथ ॥ पू ॥ वलि ॥
३ ॥ भर सनाय पाः पू ॥ ह्या वि सुं द्र पा लाय पाः पू ॥ ३ ॥ सिं
घा सनाय पाः पू ॥ या सर्व योगिनी भव पाः पू ॥ ३ ॥ प्रेता सना
य पाः पू ॥ ह्ये सिद्धि वा मुं डाय पाः पू ॥ ३ ॥ मूखा सनाय पा
पू ॥ गां गी गू ग्लों श्री कल गणेशाय पाः पू ॥ ३ ॥ समय द्वा
य सक भभा ॥ स्तोत्र ॥ देवी पूत्र विशाख त्वरु रा शा शि करं

क्षत्रपालं त्रीनेत्रया देवी योगिनी वैशकलभयहरि र
क्तचामुण्डा काख्या ॥ नौमि श्रीविघ्नकेशं परमसुखकरं
पंचकं यद्गुणं चतुर्वक्त्रं पूजकानां हरतु भयं सदा संश
यप्रकोरोतु पंचवल्परचना विधेस्तत्सर्वविधिपरिपू
र्णनस्तु ॥ विंशति ॥ देवतावाहना ॥ श्रीसंवर्ता ॥ आवाहन
शायं ॥ सप्तवलि वीर्य ॥ वलिमूले मतैव ॥ ॥ गोहृदया
॥ श्रीदेवपूजा ॥

यत्पास्यसंगं ॥ आसनतया ॥ पद्मासनं नायपां पू ॥
मूखासनं नायपां पू ॥ ध्यानं ॥ मूषपृष्ठासनं देवं शुभा
गं वक्रकं ॥ त्रीनेत्रं पद्मं लंडुकं मूलाक्षं वैवधारकं ॥
नागयशोपवित्रं च सर्वदुरितनाशनं ॥ एवं विघ्नहर
ध्यात्वा गणनाथं महात्मना ॥ आवाहनं तय ॥ त्री
यां जलितो ॥ ३ ॥ विसृज्य मूलो देवतानां ॥ गंगायां सल विभोष्टं
सलजाना ॥

नानापापप्रताशनं पूतकृत्वा प्रयुक्तानां भ्रानार्थं च
प्रथोक्ता ॥ ॥ चन्दना ॥ ऐं इदं मलयसंभुतं चन्दनं
हिमशितलं वीरजाक्षेत्राविरुत्तहारा ममसिद्धये
॥ सिंदुरा ॥ ऐं पूर्णवर्द्धनक्षत्रस्य लाङ्घनं वीरनृषितां
गृहानवीरविरांसि सिंदुरवर्गदयकं ॥ ॥ अक्षेत
॥ ऐं अक्षेत सर्ववीरे सवीरभाववरप्रदं ॥ सर्वमंगल

दानृत्वं गृहाराण परमेश्वरी ॥ ॥ जजंका ॥ ऐं उपवि
मिदं सुत्रं मेरुक्षेत्रस्य लाङ्घनं ॥ गृहारा वीरयाग
स्य फलप्राप्ते च ये मम ॥ ॥ स्वाता ॥ ऐं नानापूष्प
सुगंधानि मालत्वा कुसुमादयः ॥ सौभाग्यं सिद्धिदं
भद्रपूष्पा रोहं रा मूत्रमां धूप ॥ दिप ॥ नैविद्या ॥ फ
लफुल ॥ पको वान ॥ जप ॥ स्तोत्र मराड दयका व ॥

विपिपुजा॥ ॥ ऐकालि २ वजेभरि लोहदराय नमः
ऐवागीस्वर्ये नमः ऐलक्ष्मि नारायणाय नमः ऐउमाम
हेश्वराय नमः ऐब्रह्माविष्णु शिवसक्ति सहिताय नमः
॥ वीति ॥ ज्योतिर्मूला ॥ ॥ त्रोत्रा ॥ अङ्गयस्वतु नो सायस
क्ति कार्याय तत्पर ॥ पसुछेदात्तसिधुं स्वङ्गनाथ नमो लु
ते ॥ अत्रगंधादि ॥ किंदु ॥ ॥ पसुया रुद्रने मंराडलदय

केनेवदतये ॥ पसुवलिपिय रुद्रास्त्राय फट् ॥ लंघन
हाय रुद्रास्त्राय लाहादाय ॥ रुद्रास्त्राय ॥ मोधनयाय
॥ लाहादाय ॥ रुद्रा ॥ धेनूमूला ॥ पसुपुजा ॥ हाहा ॥ रुद्रा
॥ ज्योतिर्मूला ॥ धुप्रदिपनैविद्य ॥ ॥ पसुमंत्रकने ॥ शिल्पा
जाकिजोनाव ॥ ऐ पसुपासाय विघ्नेहे विश्वकर्मसौधि
महितनोजिवप्रयोद्याता ॥ ॥ पसुसंकल्या ॥ अश्वस्त

I 6830

363
gaulsa stria

वरारुक्ते ॥ ॥ शशिना छाया ॥ पसुगृहा देते सि पु
जाया उपयाचिते ॥ अस्या पी स्वर्ग सम्पत्ति श्रुति के त्व
प्रयोच्छति ॥ पूर्व जन्म कृत पापं पसु जन्म न जायते ॥ स
र्व पाप विनिमूक्त स्वर्ग लोक संगच्छति ॥ ॥

श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ पुष्टिष्टि
उवाच ॥ श्री कृष्ण जन्म ता नाथ कुरु कुरु दयानिधि स्तो
त्र तद्विहिये ना मु भवेद्रा यम कुरु कुरु ॥ १ ॥ श्री कृष्ण उवा
च ॥ शृणु राज प्रवक्ष्यामि तवाग्र्ये स्तोत्रं सुतमं ॥ द्वाविंश
तिष्टुष्टानां ता शानं विघ्ननाशनं ॥ २ ॥ सर्वकार्यक
रं पूरणं गुणैर्लक्षितं प्रसाधकं ॥ अस्तोत्रं शतनामकं

गोशस्यहकिर्तितं॥३॥ गरौशो विद्युराजभ्यविघ्नना
शोगगाधिप॥ रम्योदरो वक्रः तुरगो विकर्ता गगना
यक॥ गजास्यसिद्धिदाताभ्यः खर्वो मुखकवाहनः॥
४॥ सुमुखो राजमात्यभ्यः शलजानन्ददायक॥ गुरु
ग्रेजो कृद्धो भास्वि प्रीयप्रभु॥ ५॥ सिंह राभोगगाध
क्षः सिन्धुनेत्राधनदायक॥ वामनमुपकर्णश्चधुमु

सुरासुर

शंकरनन्दन॥ ६॥ सर्वातिनाशतो विज्ञः कपिलो मो
दकः प्रीय॥ संकष्टनाशनो देवः सुरासुरनमस्कृतः॥
७॥ उमासुतः कृपानुभ्यः सर्वत्र प्रीयदर्शनः॥ हेरम्बो रक्त
नेत्रः स्थूलमुतिप्रतापवान्॥ ८॥ सुषट् कार्यकर्ता
य बुद्धिदो व्याधिताशनः॥ इन्दुराट् प्रयः सुरज्जमायु
क्रोधनाशनः॥ ९॥ एकदन्तो महेश्वरो वरदो गजकर्णः

क॥ वितायको गजत्पुज्यो फलदो भक्तवत्सल ॥ ११
॥ विद्याप्रदो महोत्साहि दुःखदो भाग्यनासक ॥ शि
ष्टप्रयो भालचन्द्रो नित्यसो भाग्यकर्द्धन ॥ ११ ॥ दान
सुरो डिगाराडश्च शंकरो विविधप्रीय ॥ रक्तावरधरश्च
ष्टसुभगो नागधरा ॥ १२ ॥ शत्रुधर्मि चतुर्वाहिर
सो दारिद्र्यताशकः ॥ आदिपुज्यो दयो शिलो रक्तशाणे

महोदरा ॥ १३ ॥ सर्वज्ञः सौख्यहृत्सुखकतुपुज्यो वध
प्रीय ॥ सर्वदेवमयसक्तो भुक्तिमुक्तिप्रदायक ॥ १४ ॥
इदं स्तोत्रं गणेशस्य यपठेत्सादरजन ॥ तस्य वाञ्छित
कार्यस्य सिद्धिर्भवति निश्चितं ॥ १५ ॥ राजपुज्यो ध
नाध्यक्षः पुत्रवां जायते ध्रुव ॥ शत्रुघ्नाधि विनाशाय
निष्प्रध्वनुपठेन्नरा ॥ १६ ॥ मासमात्रे तस्यास्युत्तमस्य

तेगाश्च सत्रकं ॥ श्रीकामस्तुपठेत्प्रातः विशाकामस्तुम
धिष्ठां ॥ ७ ॥ स्त्रिका मपुत्रका मश्वरात्रो प्रहरशं षक ॥
मध्याह्ने किरितिका मस्तुपठेत्सोत्रमुत्तमः ॥ ॥ इति श्री
भविस्त्रोत्ररूपरागो गणेशस्तोत्रसंपूर्णः ॥ ॥ जदक्ष
रपदभयः मात्राहितं जगत्तमे तत्सर्वक्षम्यतादेवं प्र
सिद्धपरमेश्वरी ॥ भाक्तिहितं क्रियाहितं अर्द्धाहितं जग

त्तमे तत्सर्वक्षम्यतादेवं प्रसिद्धपरमेश्वरी ॥ ॥
संस्तुतं ८८ मितिनष्ट वेशाक कृष्णयौ ठिभुक्कवार
ध्वक्कुध्व श्रीगणेशपुजाया गुः सफुदयका यलदेश
मंगल पसद्वेया पात्रवंश राउत्वा वुभाजुवीरुनवी
याजुलभुम्भ ॥ ॥ श्रीसिद्धिदाक्षिणपुजा ॥ ॥ न्यास
॥ आसन ॥ ॥ प्रेशिताय पाप ॥ ॥ रुद्रो सिद्धेश्वर म

हमैखासनायपा पूष ॥ ॥ ध्यानां ॥ पूर्णदुष्टातिशयकुं
धवलांखराडेदुयुक्ताजयनेत्रैपंवदशैर्विराजितपरां
वलात्मिकासुन्दरिम् ॥ रुद्रस्यापरिवक्तपचकयुतां
जुलासिमूराकसां सव्यपात्रकृपाशपाशकलसं
कनेप्रसादाभया ॥ ध्यानपुष्पपा पूष ॥ आवाहन ॥
मेजलि ॥ ॐ हूं हूं प्रं शोकोनेम श्रीसिद्धि

क्षिदेविपा पूष ॥ बलि ॥ स्फालमूडाह्नाति ॥ विंदा
अथसं पूजा ॥ ॥ ऐअश्वथाम्रेपा पूष ॥ ऐकल
यपा पूष ॥ ऐयासायपा पूष ॥ ऐहनुमतेपा पूष ॥ ऐ
विभिमरणायपा पूष ॥ ऐहृपायपा पूष ॥ ऐपरशु
रामायपा पूष ॥ ऐमार्कण्डेयपा पूष ॥